+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

YOJANA MAGAZINE ANALYSIS

(योजना पत्रिका विश्लेषण)

(स्वतंत्रता की अनकही कहानियां)

(August 2024)

(Part III)

TOPICS TO BE COVERED

- स्वतंत्रता आंदोलन में भारतीय भाषाओं का योगदान
- पूर्वोत्तर भारत में स्वतंत्रता संग्राम के अग्रदूत
- बरीन्द्र कुमार घोष: स्वतंत्रता के लिए संघर्ष में अग्रणी

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

स्वतंत्रता आंदोलन में भारतीय भाषाओं का योगदान:

परिचय:

- भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन एक जटिल और बहुधार्मिक सामाजिक आंदोलन था, जिसमें कई सांस्कृतिक प्रथाएं, भाषा और साहित्य की अभिव्यक्तियां शामिल थीं। आंदोलन ने ब्रिटिश शासकों को भारत की विविध सांस्कृतिक परंपराओं से आश्चर्यचकित कर दिया। सभी धाराओं का एकमात्र लक्ष्य ब्रिटिश राज को मातृभूमि से बेदखल करना था।

- इस संबंध में सभी भारतीय भाषाओं ने राष्ट्रवादी उत्साह बढ़ाने और विभिन्न समुदायों में एकता लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कविताओं और गीतों ने विशेष रूप से अशिक्षित जनसमूह तक राष्ट्रवाद का संदेश पहुंचाया। उनकी सार्वभौमिक अपील और इस तथ्य के कारण कि उन्हें समझने, महसूस करने के लिए किसी को शिक्षित होने की आवश्यकता नहीं है, कविता आसानी से लोगों तक पहुंच गई और राष्ट्रवाद की आग, आग से भी तेज फैलती थी।

- उन सभी का एक ही लक्ष्य था- दमनकर्ताओं को देश से बाहर निकालना और भारत को अंग्रेजों के चंगुल से मुक्त कराना। न केवल प्रख्यात कवियों ने बल्कि अज्ञात लेखकों के गीतों और स्थानीय गाथागीतों ने भी इस जागृति में योगदान दिया।

सामाजिक आंदोलनों में साहित्य की भूमिका:

- साहित्य की भूमिका सामाजिक आंदोलनों में अक्सर नजरअंदाज की जाती है, लेकिन यह अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। भारतीय उपमहाद्वीप में, मध्यकालीन भक्ति साहित्य ने सांस्कृतिक क्रांति की शुरुआत की, जिसने विभिन्न समुदायों को एकजुट कर उन्हें सशक्त बनाया। यह देश के एक क्षेत्र या समुदाय तक सीमित नहीं थी, बल्कि पूरे राज्य और साम्राज्यों में फैली हुई थी। इसने स्थापित किया कि सभी को ईश्वरत्व पर मौलिक अधिकार है।
- इसलिए, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि आधुनिक काल में भी साहित्य ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 19वीं और 20वीं शताब्दी के दौरान सभी भाषाओं के महान विचारकों और लेखकों जैसे बाल गंगाधर तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले, रवींद्रनाथ टैगोर, मुंशी प्रेमचंद, मैथिलीशरण गुप्त और काजी

नजरूल इस्लाम सहित कई अन्य ने अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रवादी विचारधारा को बढ़ावा दिया और लोगों को स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्रेरित किया।

भूमिगत पत्र-पत्रिकाओं एवं लेखन में व्यंग्यात्मक भाषा का उदय:

- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में साहित्यिक योगदान का एक और महत्वपूर्ण पहलू था, जब 20वीं सदी में अंग्रेजों ने राष्ट्रवादी साहित्य पर प्रतिबंध लगाना शुरू किया। इस दमन के बावजूद, पत्रिकाओं और मैगज़ीनों ने लेखकों और स्वतंत्रता सेनानियों को अपना संदेश फैलाने में मदद की।
- जब मुख्यधारा की प्रेस पर नियंत्रण बढ़ा, तो भूमिगत पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों का उदय हुआ। कई भाषाओं में पत्रिकाओं और दैनिकों ने व्यंग्य और धुंधली भाषा का इस्तेमाल किया ताकि विदेशी शासक आसानी से संदेश न समझ सके, जबकि स्थानीय लोग इसे आसानी से समझ सकते थे और सूचना या कहानी को फैला सकते थे। इस तरह, उस दौर की पत्रकारिता और प्रिंट माध्यम ने स्वतंत्रता आंदोलन को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

साहित्यिक दिग्गजों को देश के आध्यात्मिक गुरुओं का आशीर्वाद:

- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में साहित्यिक दिग्गजों को देश के आध्यात्मिक गुरुओं का आशीर्वाद प्राप्त था, जैसे श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, और श्री

अरबिंदो। अधिकांश स्वतंत्रता सेनानियों ने समय-समय पर अपने क्षेत्र के संतों का आशीर्वाद लिया। इस आध्यात्मिक समर्थन का पहलू, जो सामाजिक आंदोलनों को निर्देशित करता था, पर कम चर्चा हुई है, विशेष रूप से स्वतंत्रता आंदोलन के संदर्भ में।

पौराणिक कथाओं पर आधारित नुक्कड़ नाटकों के जरिये राष्ट्रवादी संदेश का फैलाव:

- अंग्रेजों ने जब भारतीयों की सांस्कृतिक जागरूकता को समझा, तो उन्होंने पत्र-पत्रिकाओं पर हमला किया। लेकिन भारत की सांस्कृतिक विविधता और अभिव्यक्तियों के कारण उनका प्रयास विफल रहा। भारतीयों ने नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से राष्ट्रवादी संदेश फैलाना शुरू किया, जिसमें पौराणिक कथाओं का चतुराई से उपयोग किया गया।
- भारत, जो सदियों से प्रदर्शन कला का केंद्र रहा है, ने अपने राष्ट्रीय महाकाव्य रामायण और महाभारत से प्रेरणा लेते हुए राष्ट्रवादी और देशभक्ति के संदेश फैलाने के लिए पौराणिक कथाओं का इस्तेमाल किया। इन नाटकों में अंग्रेजों को रावण, कंस या हिरण्यकश्यप जैसे खलनायकों के रूप में और महात्मा गांधी, बाल गंगाधर तिलक जैसे नेताओं को धर्म और न्याय के प्रतीक दिव्य पात्रों के रूप में चित्रित

किया गया। इस रणनीति ने ब्रिटिश राज को भ्रमित और कमजोर करने में मदद की।

- कुछ दशकों में महात्मा गांधी का संदेश ग्रामीण कहावतों और लोकगीतों का हिस्सा बन गया। सिनेमा के लोकप्रिय होने पर ये संदेश दृश्य माध्यमों में भी समाहित हो गए, जिससे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की मौखिक परंपरा को नया जीवन मिला। स्वतंत्रता की लहर के साथ, लोग अपनी सांस्कृतिक जड़ों पर गर्व करने लगे।

महात्मा गांधी के लेख राष्ट्रीय आंदोलनों में प्रेरणास्रोत बन गए:

- महात्मा गांधी ने अपने सार्वजनिक भाषणों के अलावा अपने लेखन, खासकर नवजीवन और यंग इंडिया के माध्यम से भारत में अनगिनत युवाओं को प्रेरित और उत्साहित किया। वास्तव में, कार्ल मार्क्स के लेखन के साथ-साथ महात्मा गांधी के लेखन भी सामाजिक आंदोलनों में साहित्य के प्रभाव के प्रमाण के रूप में खड़े थे। आज भी गांधी जी की रचनाएं न केवल भारत में बल्कि दुनिया भर के कई देशों में लोगों को प्रेरित करती हैं। इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि गांधी जी की रचनाओं ने देश के सभी समुदायों को बहुत प्रभावित और प्रेरित किया।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

निष्कर्ष:

- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में विभिन्न भाषाओं में लिखी गई कहानियों, कविताओं, गीतों और नाटकों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। ये साहित्यिक रचनाएं न केवल लोगों को स्वतंत्रता के लिए प्रेरित किया, बल्कि उन्हें अपनी सांस्कृतिक जड़ों की खोज और आधिपत्य का मुकाबला करने में भी मदद की। देश की हर सांस्कृतिक परंपरा की भाषा और साहित्य, जिनकी संख्या सैकड़ों में है ने मनुष्य की अंतरतम इच्छा को हर समय मुक्त रहने के लिए जागृत किया।
- इसके परिणामस्वरूप सामाजिक क्रांति और न्याय में वृद्धि हुई, जिससे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन विश्व इतिहास में एक अद्वितीय घटना बन गया।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

पूर्वोत्तर भारत में स्वतंत्रता संग्राम के अग्रदूत:

गोमधर कोंवर: असम के पहले शहीद

- अंग्रेजों द्वारा 1826 में असम पर कब्जा करने के 2 साल बाद, 1828 में शाही अहोम वंश के सदस्य गोमधर कोंवर ने पहले प्रतिरोध मंडली का गठन किया था।
- अक्टूबर 1828 की शुरुआत में गोमधर कोंवर ने कुछ महत्वपूर्ण लोगों की एक बैठक बुलाई और उन्हें अंग्रेजों को कर न देने के लिए कहा। नवंबर में उन्हें औपचारिक रूप से जोरहाट के पास 'बास्सा' में राजा घोषित किया गया। उनके नेतृत्व में एक सशस्त्र बल रंगपुर की ओर बढने लगा, जो उस समय ऊपरी या पूर्वी असम क्षेत्र का ब्रिटिश मुख्यालय था।

- दुर्भाग्य से उन्हें जोरहाट से लगभग 18 किमी दक्षिण में रोक दिया गया। गोमधर कोंवर पहाड़ियों में भाग गए थे, बाद में दिसंबर 1828 में उन्हें पकड़ लिया गया था।

- दिसंबर 1828 को जोरहाट के एक पंचायत में गोमधर कोंवर और उनके तीन साथियों को मृत्युदंड की सजा सुनाई गई, जिसे जल्द ही कम करके बिना श्रम के 7 साल के कारावास में बदल दिया गया और असम से निर्वासित कर दिया गया।
- हालांकि गोमधर कोंवर हिरासत से भागने में सफल रहे, लेकिन उन्हें जल्द ही गिरफ्तार कर बंगाल की रंगपुर सेल में भेज दिया गया, जहां माना जाता है कि उनकी मृत्यु जेल में रहते ही हो गई थी।
- इस प्रकार गोमधर कोंवर को असम में उपनिवेशवाद विरोधी संघर्ष में शहादत पाने वाला पहला व्यक्ति माना जाता है।

ढेकियाजुली नरसंहार और तिलेश्वरी बरुआ की शहादत:

- 20 सितंबर 1942 को शांति सेना के स्वयंसेवकों के नेतृत्व में आसपास के इलाकों से कई सौ लोग दोपहर के समय ढेकियाजुली पुलिस स्टेशन के बाहर एकत्रित हुए थे। उनका नेतृत्व विशेष रूप से नामित मृत्युवाहिनी के तीन सदस्यों मानवरनाथ, गोलकचंद्र नियोग और चंद्रकांत नाथ ने किया।

- प्रभारी पुलिस अधिकारी ने स्वयंसेवकों को पुलिस स्टेशन में प्रवेश करने से मना कर दिया। जैसे ही सिविल पुलिस ने उन्हें पीटना शुरू किया, लोगों ने वंदे मातरम के साथ जवाब दिया और पुलिस परिसर में घुस गए। फिर पुलिस कर्मियों ने गोलियां चला दी जिससे पूरी तरह से अराजकता फैल गई। इस बीच पुलिस ने भीड़ को स्टेशन परिसर से बाहर खदेड़ना शुरू किया, उन्हें पीटा और अंधादुंध गोलियां चलाई। इस घटना में अगले दो दिनों में कम से कम 13 लोग मारे गए, कुछ अन्य घायलों की भी मौत कुछ महीना में ही हो गई।
- उल्लेखनीय है कि ढेकियाजुली की घटना राष्ट्रीय आंदोलन के 'भारत छोड़ो' चरण के दौरान में सबसे खराब घटना के रूप में सामने आती है। यहीं पर 12 वर्षीय तिलेश्वरी बरुआ, राष्ट्रीय आंदोलन की सबसे कम उम्र की शहीद बनी (उड़ीसा के बाजी राउत के साथ सम्मान साझा करते) हुए।
- इससे भी बदतर बात यह थी कि पहले गोली लगने और फिर भाड़े के बदमाशों द्वारा हमले किए जाने के बाद जब वे सड़क पर पड़ी थी तो एक पुलिस वाहन वहां आया और उन्हें उठा लिया और फिर तिलेश्वरी या उनका शव कभी नहीं देखा गया।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

मणिपुर के थंगल जनरल: 80 वर्ष के उम्र में शहादत

- मणिपुर के सबसे बहादुर बेटों में से एक थंगल जनरल ने महाराज गंभीर सिंह के शासनकाल 1827-1834 के दौरान ऊँचा रैंक पाया। हालांकि 1834 में गंभीर सिंह की मृत्यु के बाद एक दशक से अधिक समय तक वे सुर्खियों से दूर रहे, लेकिन उसके बाद महाराज चंद्रकीर्ति सिंह (1850-1886) के दरबार में सबसे शक्तिशाली सदस्य बन गए और जनरल बने।

- 1886 में महाराजा चंद्रकीर्ति सिंह के मृत्यु के बाद चीजे बदल गई। वे राजा सुरचंद के पक्ष से बाहर हो गए लेकिन वे राजकुमार टिकेंद्रजीत के करीब हो गए और 1890 की महल विद्रोह में एक महत्वपूर्ण भागीदारी थे। ऐसा कहा जाता है कि 24 मार्च 1891 को 5 ब्रिटिश अधिकारियों को फांसी की सजा टिकेंद्रजीत के आदेश पर दी गई थी।
- मणिपुरियों की हार और उनके देश पर कब्जा होने के बाद 7 मई, 1891 को थंगल जनरल को अंग्रेजों के हाथों पकड़े गए थे।

- 13 अगस्त, 1891 की शाम को थंगल जनरल को टिकेंद्रजीत के साथ महल के पश्चिमी द्वार के सामने रोते हुए हजारों मणिपुरियों के सामने फांसी पर लटका दिया गया। यह रिकॉर्ड में दर्ज है कि जब टिकेंद्रजीत फांसी के तख्ते की ओर बढ़ रहे थे, तब थंगल जनरल को गले में फंदा डालने के लिए शारीरिक रूप से ऊपर उठाना पड़ा था। थंगल जनरल जब शहीद हुए तब उनकी उम्र लगभग 80 वर्ष की थी।

सचिन्द्र लाल सिंह: त्रिपुरा के स्वतंत्रता सेनानी

- भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में त्रिपुरा राज्य के लोगों को कोई प्रत्यक्ष भागीदारी नहीं थी। लेकिन फिर, बंगाल और भारत के अन्य हिस्सों में समूहों और संगठनों से जुड़े या उनसे प्रेरित कई स्थानीय संगठन थे जिन्होंने स्वतंत्रता और एक भारत की अवधारणा का संदेश फैलाया।

- त्रिपुरा में उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन के संदर्भ में एक व्यक्ति जो विशेष उल्लेख के योग्य है, वह है सचिन्द्र लाल सिंह। उनके पिता, दीनदयाल सिंह, जो बनारस से थे, राजा द्वारा राज्य की सैन्य व्यवस्था स्थापित करने की जिम्मेदारी सौंपी जाने के बाद त्रिपुरा में बस गए थे।

- जुलाई 1907 में अगरतला में जन्मे सचिन्द्र लाल सिंह हाई स्कूल के विद्यार्थी रहते हुए भी, अगरतला के एक सामाजिक-राजनीतिक संगठन भातृ संघ के सदस्य बन गए थे, जिसका संबंध बंगाल की युगांतर पार्टी से था।
- सचिन्द्र लाल सिंह बंगाल के महान क्रांतिकारी सूर्य सेन की टीम के सदस्य थे, जिन्होंने 18 अप्रैल 1930 को प्रसिद्ध चटगांव शस्त्रागार पर छापे की योजना बनाई थी। घटना के बाद गिरफ्तार किए गए। रिहा होने के बाद वे कांग्रेस में शामिल हो गए।
- त्रिपुरा राज्य कांग्रेस का गठन 1940 में त्रिपुरा राज प्रजामंडल के विलय के बाद हुआ था। यह त्रिपुरा राज प्रजामंडल ही था जिसने रियासत में 'पूरी तरह से जिम्मेदार' सरकार की मांग करते हुए एक आंदोलन शुरू किया था।
- इस बीच सचिंद्र लाल सिंह ने 1939-42 के रियांग विद्रोह में त्रिपुरा के जनजातीय समुदायों के बीच ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ एक अंतर्धारा देखी थी। इस प्रकार, वे जल्द ही जनजातीय आंदोलन का हिस्सा बन गए। लेकिन उन्हें जल्द ही गिरफ्तार कर लिया गया और हिरासत में रखा गया। उन्होंने औपनिवेशिक काल के दौरान अपने जीवन के लगभग 14 साल जेल में बिताए थे।
- भारत को स्वतंत्रता मिलने और त्रिपुरा की रियासत के भारतीय संघ में विलय के बाद, सचिन्द्र लाल सिंह जुलाई 1963 से नवंबर 1971 तक त्रिपुरा के पहले मुख्यमंत्री बने।

बरीन्द्र कुमार घोष: स्वतंत्रता के लिए संघर्ष में अग्रणी

परिचय:

- बरीन्द्र कुमार घोष भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख क्रांतिकारी थे। उनका जन्म 5 जनवरी 1880 को हुआ था और वे महान क्रांतिकारी नेता और आध्यात्मिक गुरु श्री अरबिंदो के छोटे भाई थे।

- वे अरबिंदो से बहुत प्रभावित थे और इस प्रकार क्रांतिकारी आंदोलन में शामिल हो गए। वे जतिन्द्र नाथ बनर्जी (एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी, जिन्हें निरालम्बा स्वामी के नाम से भी जाना जाता है) के साथ सक्रिय रूप से जुड़े थे।

क्रांतिकारी गतिविधियों में गहराई से शामिल:

- बरिन घोष भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन को उखाड़ फेंकने के उद्देश्य से क्रांतिकारी गतिविधियों में गहराई से शामिल थे। वे अनुशीलन समिति के सदस्य थे, जो एक क्रांतिकारी संगठन था जो अंग्रेजों के खिलाफ सशस्त्र प्रतिरोध की वकालत करता था।

- वर्ष 1906 में, बारीन्द्र कुमार ने बंगाली साप्ताहिक "युगांतर" प्रकाशित किया। यह समाचार पत्र भारतीय स्वतंत्रता के कारण को बढ़ावा देते हुए क्रांतिकारियों की आवाज़ बन गया।
- बाद में, बंगाल में एक फिटनेस क्लब की आड़ में गुप्त क्रांतिकारी शाखा युगांतर का गठन किया गया। उन्होंने जतीन्द्रनाथ मुखर्जी (या बाघा जतिन) के साथ मिलकर युवा क्रांतिकारियों की भर्ती में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- कोलकाता का मानिकतला एक गुप्त स्थान के रूप में उभरा, जहां क्रांतिकारी बम बनाते थे और हथियार और गोला-बारूद इकट्ठा करते थे।

अलीपुर बम कांड में सजा:

- 1908 में, बरिन घोष को अलीपुर बम कांड (जिसे मानिकतला बम षड्यंत्र के रूप में भी जाना जाता है) के सिलसिले में गिरफ्तार किया गया था, जो ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या की साजिश थी।
- अलीपुर बम कांड में बारीन्द्र घोष और उल्लासकर दत्ता (युगांतर पार्टी के सदस्य) को मौत की सजा सुनाई गई। लेकिन देशबंधु चित्तरंजन दास के हस्तक्षेप से सजा को घटाकर आजीवन कारावास कर दिया गया।
- 1909 में बारीन्द्र कुमार को अंडमान की सेलुलर जेल में भेज दिया गया।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

जेल से रिहाई के बाद पत्रकारिता पर ध्यान:

- बारिन घोष को 1920 में आम माफ़ी के बाद जेल से रिहा कर दिया गया था।
- अपनी रिहाई के बाद, उन्होंने क्रांतिकारी गतिविधियों से खुद को दूर कर लिया और लेखन और पत्रकारिता पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने कई किताबें लिखीं और अपने लेखन के माध्यम से राष्ट्रवादी विमर्श में योगदान देना जारी रखा।
- भारत के स्वतंत्रता संग्राम में बारीन्द्र कुमार घोष का योगदान महत्वपूर्ण था और वे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति बने हुए हैं।